अभी पड़ता है जो बाबा समझावे फिर आगे। अभी तो बहुत–कुछ समझना है– ये समझ में आता है; पर हम कुछ भी कहते हैं हम तो, अटकल झोका मारते हैं। कहेंगे कि हाँ, ओपिनियन या फलानी चीज़ है, फलानी एड्रेस है? वो भी नहीं बताएँगे। ये ज़रूर है कि सतयुग है और सुखधाम है इसलिए सुख अपार है। वो भी समझा जाता है कि आदि में सुख अपार है, अंत में दुःख अपार है। ये खेल बना हुआ है ऐसे। ऐसे ही समझ में आता है; क्योंकि ये तो बिल्कुल ईज़ी है नई दुनियाँ और पुरानी दुनियाँ। जबकि संगमयुग है तो भी पुरानी दुनियाँ तो साथ में है ना! संगमयुग है तुम बच्चों के लिए और उनके लिए तो, बहुतों के लिए, ढेरों के लिए तो कलहयुग है ना! संगमयुग जब तुम समझाओ कि ये हमारा एम–ऑब्जेक्ट; इसलिए पुरुषोत्तम संगमयुग है। अभी सतयुग तो संगमयुग नहीं कहेंगे, पुरुषोत्तम संगमयुग भी नहीं कहेंगे। इस समय संगम को ये नाम दिए हुए हैं। तो ये समझ में आते हैं बरोबर ये बहुत मीठे हैं देवी–देवताएँ, तो इनका राज्य भी मीठा है और ऐसे समझ में भी आते हैं, बुद्धि भी कहती है अभी। समझदार के आगे बेसमझ नमन भी करते हैं। ये फिर जो तुम बच्चों ने बहुत ही देखा, लक्ष्मी–नारायण मंदिर, लक्ष्मी–नारायण का मंदिर कितना देखा है! जन्म–जन्मांतर भक्तिमार्ग में देखते आए हो और अभी तुम लोग को बाप ने आकर बताया है कि अरे बच्चे, ये तो तुम्हीं बनने वाले हो। पीछे ये 84 जन्म के बाद अब फिर तुम बनते हो। तो भी बैठ करके बाप अच्छी तरह से हिस्ट्री और जॉग्रफी वा रचना के आदि,मध्य,अंत का ज्ञान सुनाते हैं। तो निश्चय बैठता है। कि ये भी समझ में आता है कि इस समय में अभी हम असुर हैं और पीछे देवता बनने–2 के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। हाँ, ये भी समझ में आता है कि ये पवित्र हैं; क्योंकि पवित्र दुनियाँ थी और ये पवित्रता की निशानी दी जाती है चित्रों में, जो भी पवित्र होते हैं। परन्तु वो पवित्रता के साथ उनको ये ताज है। तो जैसे डबल ताज– एक पवित्रता का, एक वो।.....और बहुतों को शौक होता है समझाने का और समझाने का। फलीभूत वो ही होते हैं जो फिर योग में भी हों। या योग नहीं है, वहाँ फिर वो समझाने में भी इतना बल नहीं है, समझाने में भी। ये अपनी जाँच की जाती है– हम कहाँ तक याद में हैं, कहाँ तक ज्ञान में हैं और जिन–2 को ज्ञान देते रहते हैं, वो उनकी बुद्धि में ये टपकता है– हम फलाने को दिया, फलाने को दिया, फलाने को दिया। जितने–2 को ज्ञान देते हैं, जितने–2 फिर समझते हैं जो, वो भी याद रहते हैं बच्चों को। फिर याद कौन रहेंगे? जो 2,4,10,20,25 दफा आएगा तो याद रहेंगे कि इतना दफा ये आता था, हम उनको ये सभी बातें समझाती थीं। तो क्या–2 समझाती थीं, वो भी उसी समय में बुद्धि में आता है। तो दिन, सारा दिन यही विचार, यही सर्विस। तो जो सेण्टर, दुकान निकालके बैठे हुए हैं। जैसे कोई कपड़े वाला भी दुकान निकालके बैठे, तो उनकी बुद्धि में क्या होगा? ये कपड़ा होगा, रेडीमेट कपड़ा होगा, वो फलाना होगा। वो सारा दिन उसका विचार–सागर उसके रेडीमेट कपड़ों में चलता ही होगा, दुकानदार अगर है। तुम भी दुकानदार हो। तुम हैं सबसे ऊँचे दुकानदार। तुम्हारे से ऊँच कोई दुकानदार होता ही नहीं है; क्योंकि ये दुकान .....। ...और तुम बच्चों को भी रूप–बसन्त बनना है। ये भी ज्ञान है। किसको ये समझाना कि अपन को आत्मा समझो। तो ज्ञान दे रहे हैं ना! तो इसको भी ज्ञान कहा जाता है। फिर समझाते हैं– अच्छा, अपन को आत्मा समझो, बाप को (...)। ये भी तो ज्ञान है। यही ज्ञान हम सिखलाते हैं ना और योग का भी ज्ञान सिखलाते हैं। ये सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है, वो भी ज्ञान समझाते हैं। याद की यात्रा में कैसे रहो, इसका भी ज्ञान समझाते हैं। दोनों को ज्ञान कहा जाता है। मनुष्यों ने इसका नाम ऐसे ज्ञान–विज्ञान कर दिया है– विज्ञान और ज्ञान। ज्ञान तो बहुत है। विज्ञान फिर कहा जाएगा कि मन्मनाभव। बस, एक ही अक्षर है। उनमें दूसरा अक्षर नहीं आता है। ज्ञान में तो बहुत अक्षर आते हैं। विज्ञान बस जैसे घर को पहुँच गए। घर को पहुँचने का है ना बच्चे! ज़रूर कुछ तो नाम सुना है कि हाँ, तभी तो ये ज्ञान–विज्ञान भी

भवन नाम रखा है ना! भले वो लोग कुछ अर्थ नहीं समझते हैं; परन्तु नाम तो ये जो सुने हैं शास्त्र में, वो सभी रखे हैं कहाँ–न–कहाँ, बाकी समझते नहीं हैं। नहीं! कि अव्यक्त नाम हैं ना, वो ऑटोमैटिकली रख देते हैं। देखो भले त्रिमूर्ति हैं, तीन मूर्ति रोड, तीन मूर्ति हाउस, अर्थ नहीं समझते हैं। ये अर्थ सब तुम बच्चे सीख रहे हो। बाप तुमको सिखला रहे हैं बच्चों को; क्योंकि ये बाप बच्चों को सिखलाते हैं। इनका नाम–2 है ऐसा कि फादर सो टीचर। तो ये एक ही का नाम ऐसे है। अभी फिर अनेकों को पढ़ाते हैं। भले कोई बाबा ने कहा कि टीचर होते हैं बाप, होते हैं। देखो, जैसे ये इसका लौकिक बाप टीचर था और ये पढ़ा हुआ था उनके पास। अलफ,बे,ते– ये छोटे दर्जे होते हैं। 1,2,3,4 वे छोटे दर्जे, वो 3–4 तक वो पढ़ाते थे; परन्तु फिर वो गुरू नहीं फिर। गुरू तो दूसरा ही होता है। बाप तो किसका गुरू होता ही नहीं है और मुख्य बात तो ये है ही गुरू, जो सद्गति दाता। तो सर्व का सद्गति दाता, तो ये तो गुरू है। सबसे ऊँची ये गत तो ये देते हैं। तो ये सभी विचार करके बच्चों को यादगार अच्छा आना चाहिए। बाबा–2 भी है। बाबा–2 है; क्योंकि बैठे हुए हैं सारा दिन, 'बाबा–2' करते ही रहते हैं और 'बाबा–2' ये भी जानते हैं कि वो जो बाबा है, शिवबाबा, वो भी तो इसमें आते हैं; इसीलिए तुम यहाँ बैठे हो ना! अगर वो इसमें नहीं आते, तो तुम इस बाबा के पास क्यों बैठे हो इतने? ये यहाँ बैठने का भी दरकार नहीं है। ये कोई हद का बाबा तो नहीं है। तो ये बेहद का बाप है, ये समझते हैं। शिव भी बाबा है, ये भी बाबा है। अभी किसके पास बैठे हैं? वो दोनों ही बाप के पास बैठे हैं। ये समझते हैं कि शिवबाबा भी है। इनमें प्रवेश करते हैं इसलिए बाबा भी है। हम दोनों के ही बच्चे कहलाते हैं। कहलाते हैं तभी तो 'बाबा–दादा' कहते हैं ना! सिर्फ एक के तो नहीं कहलाय सकेंगे ना! एक को कहलाओ तो ज़रूर कोई के मार्फत तो उनको पहचानो ना! तो जो मार्फत है, वो उनको भी तो याद करना होता है ना– इसके मार्फत और दादा को भी याद करना पड़ता है। इनके थ्रू प्रॉपर्टी मिलती है। ये है तब तुम बच्चों को प्रॉपर्टी मिलती है ना! हाँ, भोलानाथ कोई के मुख से तो बात करते हैं ना! तो शायद ऐसे समझते होवे, कोई ये कोई शिव भोलानाथ शंकर के द्वारा हमको देते हैं, जो उनके आगे जा करके "बम–3! झोली भर दे" ऐसे करते हैं। कुछ कहाँ तो मिसअण्डरस्टेंडिंग है तो सही ना! क्योंकि शिव के पास जा करके "बम–2 भोलानाथ" वो नहीं कहेंगे वहाँ। नहीं, शंकर के साथ करते हैं। तो ऐसे समझते हैं शायद ये शंकर कोई वो रथ है इनका, जो इनको कहते हैं– भर दे झोली; पर ये शंकर तो झोली नहीं भरते हैं। नहीं! तो ये जो भी बैठ करके जिनकी भी पूजा करते हैं या कुछ भी करते हैं, तो बेसमझी से, समझ नहीं। इसका पोजीशन क्या है, इनकी बायोग्राफी क्या है, ये कोई भी नहीं समझते हैं। तुम बच्चे तो समझते हो, तो बाप तो ये भी उड़ाय देते हैं। बोलते– क्या है, शंकर बैठ करके विनाश कैसे करेगा? शंकर भला, भला वो सूक्ष्मवतन में हो कैसे सकते हैं और ये फिर पार्वती वहाँ कैसे हो सकती है? अलंकार तो दिखलाय नहीं सके। जैसे ब्रह्मा है तो उनको कोई अलंकार नहीं दिखलाते हैं। तो सूक्ष्मवतन में भी तभी अलंकार नहीं होना चाहिए। तो भला इस हिसाब से विष्णु के भी अलंकार नहीं होने चाहिए। कहाँ से लाया इतना जेवर वहाँ, ऐसे पूछेंगे ना! कहाँ से खरीद किया? शंकर ने सूक्ष्मवतन में ये जेवर कहाँ से खरीद किया भला, जो इतना पहनते हैं? तो समझते हैं ना– सूक्ष्मवतन में हो ही नहीं सकते हैं तब, ये जेवर पहने हैं। नहीं तो लॉ कहते हैं– सूक्ष्मवतन में तो सूक्ष्म शरीर होते हैं। ये ज़ेवर कहाँ से आए फिर? तो देखो, उड़ाना पड़ता है ना! ज़ेवर तो हैं ल०ना० को। ये दोनों का ये दो रूप हैं; इसलिए इनको युगल कर दिया व कम्बाइण्ड कर दिया है। बाकी ये, तो ये सभी जो बातें हैं, विचार–सागर–मंथन करते हैं। फिर दूसरी दुनियाँ वाले कुछ भी मंथन नहीं कर सकते, उड़ भी नहीं सकते हैं। बस, हाथ जोड़ते थे। बड़े–ते–बड़ी बात, भक्तों को काम का हाथ जोड़ना और कुछ भी नहीं समझना। समझना कुछ भी नहीं, मत्था टेकना, हाथ जोड़ना, बाकी कुछ भी नहीं। बाकी फिर हैं दंत–कथाएँ सभी। अगर शिव पुराण है, तो शिव पुराण

तो ये गीता है वास्तव में। शिव का पुराण तो ये गीता है वास्तव में। शिव ने आ करके गीता सुनाई है। तो फिर दो तो शास्त्र हो नहीं सकते– शिव पुराण और गीता। नहीं, उनकी कथाएँ दूसरी हैं, इनकी कथा दूसरी है। ये इस, राजयोग है इसमें, उस शिव पुराण में कोई राजयोग है नहीं। तो ये समझने की बातें बहुत हैं इसमें। तो समझ–2 फिर भी सब–कुछ भूल कर–करके, बाबा कहते हैं कि मन्मनाभव। ये तो समझे हो ना कि आत्मा पतित बनी है, उनको पावन बनने का है और ये ये समझते हैं कि हम 84 जन्म पूरा किया है; इसलिए पहले जन्म में जाएँगे। तो पहले जन्म में तो कल्प–2 थे ही तुम, कोई नई बात तो बिल्कुल हुई नहीं है। है बहुत सहज, हल्का; परन्तु इतना विचार–सागर–मंथन करना या अपने साथ रूह–रिहान करना, अपन को खुश करना आपे ही। बाबा इतनी युक्ति बता देते हैं कि तुम बच्चे आपे ही विचार–सागर–मंथन कर उसमें आपे ही खुश रहो, रमण करो; परन्तु ऐसे भी कोई से होते नहीं हैं। भले देखो ये बाप नज़दीक में भी बहुत है। ये भी समझते हैं, साथ में है जैसे। तभी भी साथ में है और याद करें कि वो साथ में है मेरे। सारा दिन याद रहे, वो भी नहीं हो सकता है। बाप साथ में है और ये हरदम याद रहे, तो ये तो फिर कर्मातीत अवस्था हो जाए। अभी वो तो समय नहीं हैं आने के अभी। ये हिसाब लगाया जाता है ना! ऐसे कोई न–2 समझे कि कोई इस समय में कोई पास हो गया है, ऐसे नहीं हो सकता है। पुरुषार्थी ज़रूर हैं, सब पुरुषार्थी हैं। पुरुषार्थ कराने वाला और करने वाला, ये हैं जीते जी लेंगे, जब तलक पुरुषार्थ कराने वाले का ये ड्रामा में जो पार्ट है, वो पूरा हो। पूरा होगा तब जबकि पहले नंबर में कोई–न–कोई कर्मातीत अवस्था को पाएँगे। पीछे ये विचार आते हैं कि बहुत हल्का हो जाएँगे यहाँ। अशरीरी हो जाएँगे तो उनको शरीर की जैसे कि भासना नहीं आती है, जैसे कि है नहीं शरीर। इतना हल्का हो जाएगा। पर विवेक ऐसे कहते हैं कि जब ये ...., मैं आत्मा, शरीर नहीं हूँ, तो वो हल्का होता जाएगा ना! निश्चय–बुद्धि होते जाएँगे, तो जैसे कि ये शरीर अलग होता है। ऐसे अलग होते–2 और शरीर छूट जावे। तो मैं समझता हूँ कि शब्द ये क्या बोलते हैं, देते हैं स्कॉलरशिप, तब मिल सकेगी। ऐसा विवेक ये कहता है। ये तो आगे चल करके वहाँ मालूम पड़ता जाएगा; क्योंकि टाइम तो बहुत पड़ा है आगे। टाइम बहुत, सिर्फ इसीलिए कहते हैं कि अभी पैगाम नहीं पहुँचा है बहुत जगह में। सब जगह पैगाम पहुँचना ज़रूरी है। अभी अखबारों में भी ये भी नहीं है ऐसा दिलपसन्द बात, जो मनुष्य समझे कि ये त्रिमूर्ति शिव है, ये इनका रचता है और ये ब्रह्मा द्वारा ये सब कराते हैं। ऐसा सबको मालूम हो, ये टाइम लगेगा अभी। होगा, ऐसे नहीं कि नहीं होगा। ये मुख्य बात है ना, बहुत मुख्य, सबसे मुख्य बात है। तो ज़रूर अखबारों में पड़ेंगे। एक अखबार से दूसरी, दूसरी से तीसरी। पीछे ये बच्चे जानते हैं कि सबसे प्रिन्सिपल बात ये हो जाएगी, और सब बातों से मुख्य बात सबसे ये हो जाएगी कि हम आत्मा हैं और बाप को याद करने से ही हम पावन बनेंगे, ये मुख्य बात हो जाएगी सब बातों से और सब कमती। जैसे कोई बैरिस्टरी पास करते हैं, तो बाकी नीचे इतनी नॉलेज तो भूल जाते हैं ना, वो नॉलेज कोई काम की थोड़े ही है। कितनी नॉलेज लेते हैं, कितने टीचर्स पढ़ाते हैं। नहीं, ये एक ही टीचर पढ़ाते हैं, नॉलेज बहुत लम्बी–चौड़ी है। इसका भी मुद्दा है। विवेक कहते हैं– विचार–सागर–मंथन करते हैं तो ये सभी ध्यान में आते हैं कि अभी बहुत–कुछ समय है। बहुत–कुछ प्वॉइण्ट्स हैं, जो बाप आगे चल करके सुनाते रहेंगे। जैसा–2 सुनाते रहेंगे इतना–2 बाप से बुद्धियोग जुटता जाएगा और जो नॉलेज है, उसमें भी परिपक्व होते जाएँगे ना! कच्चे भी पक्के होते जाएँगे। (म्युज़िक बजा)

स्वीट रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार और गुडनाइट।